IJMRT: Volume (5), Issue 5, 2023
International Journal of Multidisciplinary Research Transactions
(A Peer Reviewed Journal)
www.ijmrt.in

ISSN (Print):2663-2381
ISSN(Online):2663-4007

उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का सीमान्तीकरण: एक गुणात्मक समीक्षा

सुनीताभारती*

समाजाशास्त्र विभाग,बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

DoI: https://doi.org/10.5281/zenodo.7823418

सारांश

इस शोध पत्र में यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके सीमान्तीकरण के कारणों से विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों पर बहुत कम अध्ययन किये गये है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों से तात्पर्य ऐसे विद्यार्थियों से है जो अपने परिवार में विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाला पहला है। उसके अतिरिक्त परिवार में उच्च शिक्षा किसी भी सदस्य ने नहीं प्राप्त की। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सीमान्तीकरण के कारणों से अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है उनके अभिभावकों का उच्च शिक्षा प्राप्त न कर पाना प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति के साथ ही साथ उनकी सामाजिक- आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों के द्वारा कॉलेज एवं विश्वविद्यालय के चुनाव के लिए उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार को देखते हुए निम्नस्तर से भी आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेजों में प्रवेश ले रहे है किन्तु उन्हें प्रवेश प्रक्रिया के समय भी उनकी स्थिति को देखते हुए भी उन्हें प्रवेश लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें अध्ययन कक्ष में पाठ्यक्रम एवं भाषा से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सामाजिक अन्तक्रिया करने में संकोच करते हैं। जब उच्च शिक्षा में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का

Copyrights@IJMRT

स्कूल से कॉलेज में प्रवेश होता है तो उस प्रक्रिया के दौरान भी उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और इसी स्वरूप को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का सीमान्तीकरण माना जाता है।

प्रस्तावना

शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी शक्ति तथा तर्क शक्ति समस्या समाधान तथा बौद्धिकता, प्रतिमा तथा रूझान धनात्मक भावुकता तथा कुशलता और अच्छे मूल्यों तथा रुचियों को विकसित करता है। शिक्षा के माध्यम से ही वह मानवीय,सामाजिक, नैतिक और अध्यात्मिक जीव में परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य प्रतिदिन तथा हर क्षण कुछ न कुछ सीखता है। इस प्रकार मनुष्य का समस्त जीवन अपने आप में ही एक शिक्षा है अतः शिक्षा निरन्तर चलने वाले प्रक्रिया है जिसका सम्बन्ध सदा विकसित होने वाले मानव तथा समाज के साथ है। शिक्षा समाज के विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एव कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

शिक्षा ही मानव जीवन को श्रेष्ठतम मार्ग प्रशस्त करने का एक माध्यम एवं गहन प्रक्रिया है शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का सुचारू रूप से सामाजीकरण होता है और धीरे-धीरे प्राथमिक शिक्षा करते-करते उच्च शिक्षा तक पहुँच जाता है। उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात ही मनुष्य अपने व्यवसाय का सफलतम मार्ग चयन करने में एवं सामाजिक समायोजन स्थापित करने में सफल हो पाता है क्योंकि किसी भी देश की प्रगति का प्रमुख तथा महत्त्वपूर्ण आधार उच्च शिक्षा ही है। उच्च शिक्षा ही मानव को अपने मूल्यों को प्राप्त करने का एक साधन है जिससे देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों को निभाने एवं भावी जीवन को सुदृढ़ मार्गदर्शन प्रदान करने का कार्य कर सकता है तभी शिक्षा का सही मूल्यांकन किया जा सकता है और देश का सर्वागीण विकास सम्भव हो सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही

साथ लोगों के विचारों, उनके परिवेशो रहन सहन के स्तर तथा आर्थिक, सामाजिक प्रगति के आधार एवं मानव की संस्कृति में भी परिवर्तन आ जाता है।

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा के प्रसार को देखते हुए निम्नस्तर से भी आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेजों में प्रवेश ले रहे है जैसे लेकिन वहाँ भी भेदभाव तथा असमानता का शिकार होते है अध्यापकों कॉलेज और विश्वविद्यालयों में भी एक उप-संस्कृति को भी जन्म देता है जिसके कारण पीढ़ी के विद्यार्थी सीमान्तीकरण का शिकार हो जाते है। वे विद्यार्थी जिनके अभिभावकों को कॉलेज का अनुभव होता उन्हें विश्वविद्यालय में समायोजन स्थापित करने में कोई असुविधा नहीं होती है। किन्तु निम्नस्तर से भी आने वाले प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेजों में अनेक प्रकार के सीमान्तीकरण का सामना करना पड़ता है जिसका विवरण आगे प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी

विद्यार्थी जो अपने परिवार में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला सबसे पहला है उसे प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी के रूप में जाना जाता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी वे हैं जो अपने परिवार में कॉलेज में भाग लेने वाला पहला है (ब्रागन एंड सिमॉन्स, 2009)। इसके अलावा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास हाईस्कूल की शिक्षा से परे कोई भी औपचारिक शिक्षा नहीं है (गिब्बन्स एंड बॉडर्स,2010) पहली पीढ़ी का विद्यार्थी भाब्द आमतौर पर उन विद्यार्थियों को संदर्भित करता है जो अपने परिवार में उच्च शिक्षा संस्थान में दाखिला लेने वाला सबसे पहला व्यक्ति है (गिब्बन्स एंड बॉडर्स, 2010) उन मध्य और हाईस्कूल के विद्यार्थियों को संदर्भित करते है जिनके अभिभावकों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के रूप में औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त हुई।

सीमान्तीकरण का अर्थ

सीमान्तीकरण आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक स्थिति में किसी समूह का सत्ता तथा संसाधनों से दूरी या व्यक्ति को प्रदर्शित करता है ये जो सामाजिक संरचना में सीमान्त की स्थिति में होते हैं उनका

आर्थिक तथा अन्य संसाधनों को प्राप्त करना कठिन होता है। उदाहरण- शिक्षा, सामाजिक सेवा, सामाजिक सहभागिता तथा स्व-निर्धारणात्मकता उनमें निम्नस्तर में होती है सीमान्तीकरण की अवधारणा को ऐतिहासिक तथा सामाजिक आर्थिक सन्दर्भ में समझा जा सकता है (डेनियल, फ़्लैचर, लिन्डर 2002)। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की विशेषताएँ प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी आमतौर पर कॉलेज में भाग लेने के लिए अपने परिवार में पहले होते है वे अपनी उच्च शिक्षा को सीमित समझ के साथ शिक्षा को शुरू करने का प्रयास करते हैं अपने साथियों की तुलना में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अक्सर कॉलेज की जीवन शैली की ओर स्थानान्तरण करने के लिए सुचारू रूप से तैयार नहीं होते है (मैकमुरे और सॉरेल्स, 2009) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अन्य साथी जिनके अभिभावक कॉलेज स्तर की शिक्षा में भाग लेते है उनकी अपेक्षा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों अपने माता पिता से उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता (टोरेंस और हर्नान्डेज, 2009) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी गैर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न आर्थिक स्तर वाले परिवारों से आते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं के अधिक होने की सम्भावना रहती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में कम अंक अर्जित कर पाते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का मानना है कि उन्हें अपने मित्रों एवं अभिभावकों से कम सहयोग प्राप्त होता है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि भी उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करती है।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रभावित करने वाले कारक

कई ऐसे कारक है जो प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों जिनके अभिभावकों ने हाईस्कूल से अधिक शिक्षा नहीं प्राप्त की हो उन्हें नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं जिनमें निम्न कारक शामिल है:

1 प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों का सीमान्तीकरण

2 अकादमिक तैयारी का निम्नस्तर

3 शैक्षणिक आकांक्षाओं का निम्न होना

4 विशेष रूप से माता-पिता से कॉलेज में भाग लेने के लिए कम प्रोत्साहन और समर्थन।

5 कॉलेज में आवेदन प्रक्रिया के बारे में कम ज्ञान।

6 कॉलेज के लिए भुगतान करने के लिए कम संसाधन।

कॉलेजकेलिएअकादमिकतैयारी

जिन विद्यार्थियों के माता पिता कॉलेज नहीं गए थे उन विद्यार्थियों में अपने साथियों की तुलना में कॉलेज के लिए तैयार होने की सम्भावना कम होती है (चौय, 2001) हाईस्कूल के कठोर पाठ्यक्रम में गणित को विदेश रूप से शामिल करने से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में कॉलेज जाने के अवसरों में वृद्धि होगी। और विद्यार्थी कॉलेज जाएंगे (हार्न और नुनज, 2000) ने पाया कि हाईस्कूल के पाठ्यक्रम में गणित को विशेष रूप से शामिल करने से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए दोगुना अधिक अवसरों की संभावना में वृद्धि होती है तथा प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा चार साल के पाठ्यक्रम में दाखिला लेने की संभावना बढ़ जाती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी पाठ्यक्रम की उपलब्धता की कमी के कारण विशेष रूप से माता पिता के प्रोत्साहन की कमी के कारण इन विद्यार्थियों को प्रारंभिक पाठ्यक्रम ही लेना होता है जैसाकि हॉर्न और नुजने पाया कि माता पिता के प्रोत्साहन और भागीदारी से विद्यार्थियों की कठोर हाईस्कूल पाठ्यक्रम और कॉलेज में दाखिला लेने की संभावना बढ़ जाती है हालांकि अभी भी स्कूलों एवं कॉलेजों में सीमित पाठ्यक्रम है और पाठ्यक्रमों की उपलब्धता की समस्या आज भी विद्यमान है।

कॉलेज के लिए आकांक्षाएं:

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को आठवीं कक्षा के आरंभ से उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के बारे में कम उम्मीदें होती है कि बारहवीं कक्षा में अपनी शिक्षा को जारी रख पायेंगे तथा उन्हें यह भी प्रतीत होता है अन्य विद्यार्थी उनकी तुलना में बेहतर है (चॉय, 2001) बारहवीं कक्षा में केवल आधा (53 प्रतिशत) प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी लगभग 90 प्रतिशत) अन्य विद्यार्थियों की तुलना में स्नातक की डिग्री अर्जित करने की

उम्मीद करते हैं (बर्कनर एंड चावेज़, 1997, चॉय, 2001) होस्लर और सहयोगियों (1999) ने पाया कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अभिभावकों से मिलने वाले मजबूत प्रोत्साहन और समर्थन विद्यार्थियों को कॉलेज में प्रवेश लेने और नामांकन कराने के लिए प्रभावित करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है। दुर्भाग्यवश, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने अभिभावकों से कॉलेज जाने के लिए कम प्रोत्साहन और समर्थन प्राप्त होता है और कुछ हद तक निराशा भी प्राप्त होती है (बिल्सन एंड टेरी, 1982 हॉर्न एंड नुनैज, 2000 लंदन, 1989 टेरेन्जिनी एट अल. 1996: यॉर्क एंडरसन एंड बोमन, 1991) पोस्टसेकंडरी शिक्षा के संपर्क में कमी होने के कारण पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावक, विद्यार्थियों को कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने से होने वाले सामाजिक और आर्थिक लाभों से अवगत नहीं होते हैं (वॉले और फेडेरिको, 1997)। इसके अतिरिक्त, अभिभावकों को कॉलेज की प्रक्रिया के बारे में गलत फहमी हो सकती है. खासकर कॉलेज की लागत और वित्तीय सहायता के बारे में जिसके कारण वे अपने बच्चों को पोस्टसेकंडरी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित नहीं करतें तथा विद्यार्थी हतोत्साहित हो जाते है (वर्गास, 2004)।

कॉलेज के लिए योजनाः

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और उनके माता पिता को अक्सर पोस्टसेकंडरी शिक्षा के लिए तैयारी, आवेदन करने और भुगतान करने की प्रक्रिया तथा कॉलेज ज्ञान के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी नहीं होती है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों में उनके स्वयं के कॉलेज ज्ञान कॉलेज प्रवेश प्रक्रिया में अनुभव की कमी के कारण महत्त्वपूर्ण सूचना स्त्रोत यानी इंटरनेट, अभिभावक शिक्षक सम्मेलन के बारे में सीमित अनुभव होते है। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की कॉलेज तक की पहुँच में भाषा तथा संसाधनों कमी बाधा उत्पन्न करती है (चॉय, 2001 ओलिवेरेज एंड टियरनी 2005 टोनंत्सकी एट अल. 2002 वर्गास 2004)। परिणामस्वरूप प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों में विशेष रूप से चार साल की संस्थाओं में प्रवेश लेने के लिए आवश्यक शर्तों को पूरा करने की संभावनाएं कम होती है भले ही वे कॉलेज के लिए योग्य हो

और उनमें कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए आकांक्षाएँ हो (बर्कनर एंड चावेज, 1997, चॉय, 2001 वॉलेएंडफेडेरिको, 1997)।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की चुनौतियाँ अकादमिक और सामाजिक एकीकरणः

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने साथियों के मुकाबले कॉलेज के लिए अकादमिक रूप से कम तैयार होते हैं। उन्हें न केवल सीमान्तीकरण से ऊपर उठाने के लिए रेमेडियल कोर्स की आवश्यकता होती है बल्कि उनमें अध्ययन और समय प्रबंधन के कौशल की कमी होती है उन्हें अपने अकादमिक जीवन के पहलुओं और अपनी अकादमिक क्षमताओं में कम विश्वास होता है और वे नौकरशाही को नेविगेट करने में अधिक कठिनाई का अनुभव भी करते हैं (बुई. 2002 क्रूस एट अल. 2005 पेनरोस, 2002, रिचर्डसन एंड स्किनर 1992 तेरेन्जिनी एट अल. 1996)

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी अपने साथियों के मुकाबले कॉलेज में अकादमिक क्षेत्र में पूर्व तैयारी के आधार पर निम्न प्रदर्शन करते है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की अध्ययन कक्ष में चुनौतियाँ

प्रथम पीढ़ी का विद्यार्थी होने के कारण इन विद्यार्थियों को अध्ययन कक्षा में भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है वे अध्ययन कक्ष में अपने सहपाठियों से अन्तक्रिया करने में संकोच करते है तथा इन विद्यार्थियों का अध्ययन कक्ष में होने वाली गतिविधियों में भी कम नागीदारी रहती है और अपने शिक्षकों से भी स्पष्टीकरण करने में संकोच करते है कभी कभी अध्ययन का माध्यम भी उन्हें प्रभावित करता है क्योंकि अधिकांशतः प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अध्ययन का माध्यम हिन्दी होता है और वर्तमान समय में तो कॉलेजों में शिक्षक अंग्रेजी भाषा में अध्ययन करवाते है जिसके परिणाम स्वरूप इन विद्यार्थियों को अध्ययन करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है वर्तमान समय में आधुनिक तकनीकियों का बोल

बाला चल रहा है नई-नई तकनीकियों का प्रयोग अध्ययन के लिए किया जाता है किन्तु प्रथम पीढ़ी का विद्यार्थियों को इन तकनीकियों का ज्ञान न होने के कारण वे अध्ययन कक्ष में अपने कार्यों का प्रस्तुतीकरण उचित रूप से करने में सीमान्तीकरण के कारण स्वयं को असमर्थ पाते है हिन्दी माध्यम में कार्य करने पर प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को कम सराहना मिलती है।

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए उनकी पृष्ठभूमि भी एक चुनौती के रूप में सामने आती है क्योंकि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के अभिभावकों का उच्च शिक्षा प्राप्त न करना इन विद्यार्थियों के लिए चुनौती साबित होती है क्योंकि अभिभावकों उच्च शिक्षा का अनुभव न होने के कारण वे अपने बच्चों का उचितमार्ग दर्शन नहीं कर पाते कॉलेज के चुनाव और विषयों के चुनाव के बारे उन्हें उचित सुझाव देने में स्वयं को असमर्थ पाते है। किन्तु प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने अभिभावकों से नैतिक सहयोग पूर्णरूप से प्राप्त होता है उन्हें प्रवेश प्रक्रिया में भी असुविधा होती है क्योंकि आजकल प्रवेश प्रक्रिया के लिए फॉर्म ऑनलाइन प्रक्रिया के द्वारा भरे जाते है जिसके कारण उन्हें फॉर्म भरने में समस्या होती है। माता-पिता के कम शिक्षित होने के कारण अपने बच्चों से कॉलेज में होने वाली गतिविधियों के विषय में जानकारी भी नहीं ले पाते है कि उन्हें पढ़ाई में कोई समस्या तो नहीं जिन्हें अभिभावक दूर करने का प्रयास कर सकें।

सांस्कृतिक अनुकूलन

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए न केवल अपने अकादमिक और सामाजिक एकीकरण के लिए बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बल्कि उन्हें इन के साथ ही सांस्कृतिक अनुकूलन से सम्बन्धित बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। सांस्कृतिक अनुकूलन से तात्पर्य यह है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालयों की प्रचलित संस्कृति के विशय में ज्ञान नहीं

होता है क्योंकि वहाँ का वातावरण घर के वातावरण से बिल्कुल ही भिन्न होता है। विश्वविद्यालय में अन्य विद्यार्थियों के समान व्यवहार को सीखने में प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को समय लगता है सभी के साथ सम्बन्ध बनाने में संकोच महसूस करते हैं। प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज के वातावरण में असहज महसूस करते हैं वे भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते है। इन विद्यार्थियों की कॉलेज जाने की तैयारी इनके साथियों की तुलना में निम्नस्तर की होती है अपने साथियों और शिक्षकों के साथ सीमित बातचीत करने का कारण बातचीत करने में कम रूचि अनुभव की कमी तथा संसाधनों की कमी जिसमें शामिल है। ये अन्तर अकादमिक आत्मसम्मान के स्तर को कम करने एवं कॉलेज में समायोजित करने में योगदान देते हैं।

शिक्षकों से अन्तःक्रिया के रूप में चुनौती

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रायः शिक्षकों के साथ अन्तक्रिया करने में कठिनाई होती है वे अपने विचारों को शिक्षकों के समक्ष रखने में संकोच महसूस करते है। कभी कभी अध्ययन कक्ष में स्पष्टी करण करने में असहजता महसूस करते है इन विद्यार्थियों को प्रतीत होता है कि कहीं जो प्रश्नये शिक्षक से पूछ रहे हैं वो सही है या कुछ गलत तो इस प्रकार की असहजता के कारण अध्ययन कक्ष में शान्त ही रहते हैं ज्यादा न तो शिक्षकों से अन्तक्रिया करते है और बहुत ही कम अपने सहपाठियों से भी अन्तक्रिया करते है। इस प्रकार प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी सीमान्तीकरण का अनुभव करते हैं।

वित्तीय चुनौतियाँ:

प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी जो निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से आते है उनके लिए कॉलेज में प्रवेश लेने का फैसला बहुत ही कठिन होता है क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत बेहतर न होने के कारण उन्हें वित्तीय समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। कॉलेज की फीस का भुगतान करने के लिए कभी कभी प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को पार्ट टाइम जॉब भी करना पड़ता है जिससे वे अपनी शिक्षा को

सुचारू रूप से जारी रख सके निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से आने के कारण उनके पास संसाधनों की कमी होती है शिक्षा को जारी रखने के लिए प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के द्वारा किये जाने वाले पार्टटाइम जॉब गृह कार्य एवं कॉलेज की गतिविधियों को समर्पित समय के साथ हस्तक्षेप करता है जो सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। कई प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी कॉलेज को छोड़ देते हैं ताकि वे अपने परिवार का समर्थन करने के लिए और अधिक समय तक काम कर सकें क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति निम्न या मध्यम स्तरकी होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी होने के कारण उन्हें शैक्षिक, आर्थिक-सामाजिक,चुनौतियों के साथ ही साथ कई अन्य प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसमें शामिल है अध्ययन कक्ष में पढाये जाने वाले पाठ्यक्रम से सम्बन्धित प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने वरिष्ठ सहपाठियों से होने वाली असहजता, पुस्तकालय से पुस्तकों के रख-रखाव से सम्बन्धित पुस्तकालय में पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों की कम उपलब्धता तथा हिन्दी माध्यम में पुस्तकों की कम उपलब्धता इन विद्यार्थियों के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करती है। जिसके परिणामस्वरूप इन विद्यार्थियों प्रदर्शन अन्य विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर नहीं होता है। जिसके फलस्वरूप इन विद्यार्थियों पर सीमान्तीकरण का प्रभाव देखने को मिलता है। इन विद्यार्थियों को अन्य विद्यार्थियों की तुलना में समान अवसर नहीं उपलब्ध होते हैं इसलिए शिक्षा सभी व्यक्तियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यदि अभिभावक शिक्षित होते हैं तो उनके बच्चों को प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के समान चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ता है और जिन अभिभावकों में उच्च शिक्षा का आभाव होता है उन प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी स्वयं के प्रति सीमान्तीकरण का अनुभव करते है।

REFERENCES

[1]. Bindal S, Sharma S. (2010). Inclusive education in Indian context. Journal of Indian Education. 2010. Vol.35, No.4.

[2]. Bryan, Elizabeth. Simmons, Leigh Ann. (2009). Family Involvement: Impacts on Postsecondary Educational Success for First-Generation Appalachian College Students. Journal of College Student Development, 50(4), 391-406.

[3]. Gibbons, Melinda M., Borders, DiAnne L. (2010). Prospective First-Generation College Students: A Social-Cognitive Perspective. The Career Development Quarterly, 58(3), 194-209.

[4]. McMurray, Andrew J., Sorrells, Darrin. (2009). Bridging the Gap: Reaching First-Generation Students in the Classroom. Journal of Instructional Psychology, 36(3), 210-214.

[5]. Torres, Vasti., Hernandez, Ebelia. (2009). Influence of an Identified Advisor/Mentor on Urban Latino Students' College Experience. Journal of College Student Retention Research, Theory & Practice, 11 (1), 141-160.

[6]. Choy, S. (2001). Students Whose Parents Did Not Go to College: Postsecondary Access, Persistence, and Attainment. Washington, DC: National Center for Education Statistics.

[7]. Horn, L. and Nunez, A. (2000). Mapping the Road to College: First-Generation Students' Math Track, Planning Strategies, and Context of Support. Washington, DC: National Center for Education Statistics.

[8]. Berkner, L. and Chavez, L. (1997). Access to Postsecondary Education for 1992 High School Graduates. Washington, DC: National Center for Education Statistics.

[9]. Hossler, D., Schmit, J., and Vesper, N. (1999). Going to College: How Social, Economic, and Educational Factors Influence the Decisions Students Make. Baltimore, MD: The Johns Hopkins University Press.

[10]. Billson, J.M. and Terry, M.B. (Fall 1982). In search of the silken purse: Factors in attrition among first-generation students. College and University, 57-75.

[11]. Horn, L. and Nunez, A. (2000). Mapping the Road to College: First-Generation Students' Math Track, Planning Strategies, and Context of Support. Washington, DC: National Center for Education Statistics.

[12]. London, H.B. (1989). Breaking away: A study of first-generation college students and their families. American Journal of Education, 97(1), 144-170.

[13]. Terenzini, P.T., Springer, L., Yaeger, P.M., Pascarella, E.T., & Nora, A. (1996). First generation college students: Characteristics, experiences, and cognitive development. Research in Higher Education, 37 (1), 1-22.

[14]. York-Anderson, D.C., and Bowman, S.L. (1991). Assessing the college knowledge of first-generation and second-generation college students. Journal of College Student Development, 32(2), 116-123.

[15]. Volle, K. and Federico, A. (1997). Missed Opportunities: A New Look at Disadvantaged College Aspirants. Washington, DC: The Education Resources Institute and The Institute for Higher Education Policy.

[16]. Vargas, J.H. (2004). College Knowledge: Addressing Information Barriers to College. Boston, MA: The Education Resources Institute (TERI).

[17]. Oliverez, P.M. and Tierney, W.G. (2005). Show Us the Money: Low-Income Students, Families, and Financial Aid. Los Angeles: Center for Higher Education Policy Analysis.

[18]. Tornatzky, L.G., Cutler, R., and Lee, J. (2002). College Knowledge: What Latino Parents Need to Know and Why They Don't Know It. Claremont, CA: Tomas Rivera Policy Institute.

[19]. Bui, K.V.T. (2002). First-generation college students at a fouryear university: Background characteristics, reasons for pursuing higher education, and first-year experiences. College Student Journal.

[20]. Cruce, T.M., Kinzie, J.L., Williams, J.M., Morelon, C.L., and Xingming, Y. (November 2005). The Relationship between First-Generation Status and Academic Self-Efficacy among Entering College Students. Paper presented at the 30th Annual Meeting of the Association for the Study of Higher Education (ASHE), Philadelphia, PA.

[21]. Penrose, A.M. (2002). Academic literacy perceptions and performance: Comparing first-generation and continuing generation college students. Research in the Teaching of English, 36(4), 437-461.

[22]. Richardson, R.C. & Skinner, E.F. (1992). Helping first generation minority students achieve degrees. In L.S. Zwerling & H.B. London (Eds.), First Generation College Students: Confronting the Cultural Issues (pp. 29-44). San Francisco, CA: Jossey-Bass Publishers.